International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 23-10-2020; Accepted: 10-11-2020; Published: 26-11-2020
Volume 2; Issue 4; 2020; Page No. 47-50

हिन्दस्वराज की ऐतिहीसिक महत्ता

Sindhu A
Assistant Professor of Hindi, Payyanur College, Payyanur, Edat, Kannur, Kerala, India

सारांश

वर्तमान समय में आधुनिकता और उससे उत्पन्न विचार और चिंतनपद्धियँ विमर्श के स्तर पर है। 1909 में लिखित गाँधी का 'हिन्द स्वराज' आधुनिकीकरण और उससे उत्पन्न उपनिवेशवाद का विमर्श है । यह किताब गाँधी के स्वराज संबन्धी विचारों का संकलन है और पाश्चात्य आधुनिकता का विमर्श भी है। यूरोकेंद्रित पूंजीवादी व्यवस्थ पर अधिष्ठित व्यक्तिकेंद्रित समाज का विमर्श इसमें देख सकते है। राष्ट्र संबन्धी, सामाज संबन्धि, व्यक्ति जीवन संबंन्धी गाँधी के अपने संक्लनाओं को अथवा तीसरी दुनिया के विचारों को हिन्द स्वराज लिखते है। इस प्रबन्ध के प्रथम भाग में हिन्दस्वराज के संबन्ध में उठे विभिन्न मतों को समेटने का प्रयास किया है। आगे गाँधी के स्वराज संबन्धी विचारों को परखा है। गाँधी ने पाश्चात्य आधुनिकता के बदले देशी आधुनिकता को आगे रखा। राष्ट्र को औपनिवेशिक शक्तियों से स्वतंत्र बनाना उनका लक्ष्य नही बल्कि समस्त मानव की मुक्ति ही उनके विचारों के तहत में है। समता और भाईचारे के संघर्ष के रूप में गाँधी ने स्वाधीनता संघर्ष को बदल। आधुनिकता के समता और भाईचारे के मूल्यों को स्वीकार कर नए संसार के रूपायन के विचारों को गाँधी ने किस प्रकार समाज के समक्ष रखा यही इसमें अध्ययन किया गया है।

मूल शब्द: गाँधी, हिन्दस्वराज, आधुनिकता, उपनिवेशवाद, सभ्यता, आत्मनिर्भरता

प्रस्तावना

साम्राज्यवाद एक विचारधारात्मक प्रक्रिया है। सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर उपनिवेशी शक्तियों द्वारा लगाए धक्के ने इस विचारधारा को उपनिवेशित देशों में थोप दिया। आज वि उपनिवेशित समाज सामना करनेवाली सबसे बडी समस्या नव उपनिवेशवाद का है। राजनैतिक उपनिवेशन के अंत के बावजूद आर्थिक और सांस्कृतिक मसलों पर उपनिवेशी मानसिकता प्रबल रही। राष्ट्र के निर्माण में भी इस मानसिकता ने कार्य किया। स्वाधीन भारत का ढांचा उपनिवेशी राष्ट्र व्यवस्था से भिन्न न था। यह उपनिवेशीकरण के नयी प्रक्रिया को संभव बनाया। नव उपनिवेशीकरण के संदर्भ में हिन्द स्वराज को, जो आधुनिकता का विमर्श है, परखना और समझना ऐतिहासिक माँग है।

हिन्दस्वराज की ऐतिहीसिकता

आज उत्तराधुनिक दौर में आधुनिकता की आलोचना की जा रही है ।इस संदर्भ में हिन्दस्वराज का अपना ऐतिहासिक महत्व हैं। गाँधी आधुनिकता में जिए आधुनिकता के विमर्शक हैं। वे हिन्दस्वराज में अपना आधुनिक सभ्यता विमर्श प्रस्तुत करते हैं। वे केवल सिद्वान्त नही प्रसतुत करते बल्कि अपनी जिन्दगी में उसे अमल में लाकर दिखाते भी हैं। दुसरे शब्दों में कहे तो हिन्दस्वराज द्वारा वे अपनी जिन्दगी का सैद्धान्तीकरण करते हैं। उनकी पूरी जिन्दगी आधुनिक

सभ्यता का प्रतिरोधत रही। इसीलिए आधुनिक सभ्यता के संबंन्ध में कहते वक्त भारतियों के लिए 'हम' के बदले में 'तुम' का प्रयोग वे करते हैं। इसके द्वरा वे स्वयं को आधुनिक नागरिक की परिधि से बाहर रखते हैं। इसीलिए ही लीला गाँधी जैसे उत्तराधुनिकविमर्शक गाँधी को पढते वक्त उनकी पूरी जिन्दजी को पढने की आवश्यकता पर जोर देते हैं। (पोस्टकलोणियलिसम,18) हिन्दस्वराज गाँधी की मौलिक रचना हैं। 1909 में इसका प्रकाशन हुआ। तब भारत में होमरूल का संघर्ष चल रहा था। गुजराती में लिखी गयी यह पुस्तक उस समय के मुम्बय सरकार द्वारा जब्त की गयी। 1910 में इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। संवाद शैली में लिखी गई इस पुस्तक में गाँधी ने अपने राष्ट्र संबन्धी विचारों को संकलित किया है।

प्रकाशन से लेकर वर्तमान समय तक इस पुस्तक के संबन्ध में कई तरह के मत और विमर्श हुए हैं। रोमा रोला इसे 'यूरोप की विज्ञान और विकास का निषेध' कहती है (महात्मागाँधी ए स्टडि इन इदियन नेशनलिसम,30) तो,राघवन अय्यर इसे 'आधुनिक सभ्यता की कडी आलोचना' कहा। (मोरल एन्ट पोलिटिकल तोट्स ओफ महात्ला गाँधी, 74)। गाँधी एणड द क्रिटिक ओफ सिविल सोसइटी में पार्त चाटर्जी के मत में यह गाँधी की नैतिक और राजनीतिक चिंतन है। (सबालटेण स्टडीस,156) जो भी हो हिन्द स्वराज ऊपर कहे गए सभी अभिप्रायों का संकलन ही है। खुद गाँधी के शब्दों में "अन्य संस्कृति को निगलनेवाली पाशचात्य सभ्यता से मुझे नफरत है। हिन्दस्वराज में इसका कारिकेचर दिया है। " (कलक्टड वर्क्स ओफ महात्मा गाँधी-40, 300) हिन्दस्वराज के समय में देश में विदेशी सभ्यता का उत्तरोत्तर प्रभाव हो रहा था। उपनिवेशी शक्तियाँ तकनीकी ,शैक्षिक संस्थओं और प्रशासनिक के माध्यम के जरिए देश में न मिटनेवाला अधिकार स्थापित कर रही थी। गाँधी इसका प्रतिरोध करने के लिए और देश को बौद्धिक उपनिवेशन के खतरे से मुक्त करने के लिए देशी आधुनिकता को परिभाषित परने का प्रयास करते हैं।

भारत में आधुनिककीकरण की प्रक्रिया औपनिवेशिक काल में ही शुररू हुई थी। असल में देश पर औपनिवेशिक दबाव से ही आधुनिकीकरण की प्रक्रिया शुरु हुइ थी ।इसलिए भारत का आधुनिक युग में प्रवेश विलंबित और कुंठित हो गया। यूरोपीय जगत में आधुनिकता ने मनुष्य के बहिर जगत और अंर्तजगत के बीच क्रियाशील और सृजनशील संबन्ध स्थापित किया। लेकिन उपनिवेशित देशों को लिया जाए तो बाहरी और आंतरिक स्तर पर गणनीय उपलब्धि नहीं हुई। उस समय आधुनिकता के नाम पर पश्चिमीकरण ही हुआ था। मौलिक रूप से देश का कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ।इसका नतीजा यह निकला कि देश सांस्कृतिक रूप से पश्चिम की ओर झुक गया। वहाँ गाँधी देशी आधुनिकता को पारिभाषित करके देश को सांस्कृतिक उपनिवेशन से मुक्त कराने का प्रयास करते है। इस संदर्भ को स्पष्ट करने के लिए पूरनचंद्र जोशी गाँधी को उद्दत करते हैं "मेरी पश्चिमी सभ्यता का विरोध वास्तव में पश्चिमी देशों के उस हेकडीपूर्ण दावे का विरोध है कि एशियायी देशों की नियति केवल पश्चिमी देशों की नकल करना है, उनमें किसी मौलिक चिंतन या रचना की सामर्थ्य नहीं।"(स्नप्न और यथार्थ: आजादी की आधी सदी, 40) प्राच्यवादियों ने भारत का दिशा निर्धारण करते हुए इसी मानसिकता को बनाए रखने की कोशिश की। गाँधी का संघर्ष इस बेलिहाज नकल के विरुद्ध था। हिन्दस्वराज पश्चिमी गुलामीपन से निसृत समस्याओं का समाधान का प्रयास है। ' गाँधी के साथ: इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर ' लेख में रामकृष्ण मणी त्रिपाठी लिखते हैं कि " हिन्दस्वराज लिखने का एक उद्देश्य यह भी था कि सांस्कृतिक दासता का निरूपण किया जाए और विकल्प के रूप में सांस्कृतिक स्वराज की रूपरेखा वर्णित किया जाए।"(दस्तावेज़,102) गाँधी ने स्वदेशी, अहिंसात्मक

सत्याग्रह और सर्वोदय के ज़रिए, सामाजिक संरचना की पुनर्रचना कर, पश्चिमी प्रभुत्व को ठुकराकर ,विदेश को अपनी शर्तों पर और स्वयं को आपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया।

गाँधी औपनिवेशीकरण को एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र पर जमानेवाले वर्चस्व के रूप में नही एक संस्कृति द्वारा दूसरी संस्कृति पर की जानेवाले वर्चस्व के रुप में स्वीकारते हैं। हिन्दस्वराज कहती है, "हमने अंग्रेजों को स्वीकारा।इनको संरक्षण दिया ।यह सच्चाई क्यों भूल जाते हो कि उनकी संस्कृति को ही अपनाने के कारण वे यहाँ बने रहे हैं। उनके प्रति हमारा जो विद्वेष है, उनकी संस्कृति के प्रतिरोध के रूप मेँ परिवर्तित करना है।" (हिन्दस्वराज,66) सैनिक बल के आधार पर देश में अनेक राजवशों ने अधिकार स्थापित किया था। एक एक की शक्ति के क्षीण होने पर शासकों में बदलाव आया। लेकिन औपनिवेशीकरण सांस्कृतिक प्रक्रिया होने के कारण उत्तर औपनिवेशिक दौर में भी उसका वर्चस्व क्षीण नही हुआ बल्कि मज़बूत होता जा रहा है। अपने गुलामीपन को अंग्रेजों द्वारा बलपूर्वक थोपे गए अधिकार के रूप में नहीं देशवासियों द्वारा दिए गए अधिकार के रूप में पहचानते हुए गाँधी पूछते हैं "इस्टिइंडिया कंपनि को किसने कम्पनी का बहादुर बनाया?..... हमने यूरोप की प्रभुता को स्वीकारा इसलिए ही वे यहां कायम रहें"। (हिन्दस्वराज,41) किताब उपनिवेशीकरण को भारत की नैतिक गिरावट के रूप में स्वीकारते हुए यूरोपीय प्रभुता को स्वीकारने वाली उपनिवेशित जनता की इछ्चाओं का विमर्श प्रस्तुत करते हैं।

यह किताब आधुनिक सभ्यता की पहली समीक्षा हैं। आधुनिक स्भयता के विमर्श का मतलब उदार लोकतंत्र से न था, बल्की उनकी भोगलिप्सा और प्रतिस्पधात्मक जीवन दर्शन से हैं। वह उदार लोकतंत्र संक्लप को स्वीकारते हुए भोगोन्मुखी जीवन दर्शन को तोडने का प्रयास करती है। वे आधुनिक सभ्यता को केवल बाहरी भ्रम के रूप में स्वीकारते है। भारत जैसे देश इस बाहरी भ्रम में फँस गए है। इसीलिए ही देश गुलामिपन झेल रहा है। गाँधी के अभिप्राय में भारत अंग्रेज़ों का गुलाम नहीं आधुनिक सभ्यता का गुलाम है। राघवन अय्यर कहते है "अपने पूर्वगामियों से भिन्न गाँधी औपनिवेशिक मुठभेड को यूरोप और भारत के बीच में नहीं प्राचीन और आधुनिक सभ्यता के बीच में मानते हैं।"(मोरल आन्ट पोलिटिकल तोट्स ओफ महात्मा गाँधी, 291) इसलिए आधुनिकता के मूल्यों को स्वीकारते हुए परंपरा का पुनःनिर्माण किया। इन मूल्यों के अंतर्वेधन द्वारा आधुनिक सभ्यता का प्रतिरोध किया। आधुनिक सभ्यता वस्तुतः महाजनी सभ्यता है। यह नैतिकता का कोई कदर नहीं रखती। यह मनुष्य की अस्मिता पर वार करती है। "यह एक ऐसी सभ्यता हैं कि अगर हम धीरज कर बैठे रहेंगे तो सभ्यता चपेट में जल मरेंगे। पैगम्बर मुहम्मद साहब सोख के मुताबिक यह शैतानी सभ्यता है। हिन्दु धर्म इसे निरा कालजुग कहता है। .....यह सभ्यता दूसरों को निगलने वाली है और खुद नाशवान है।" (हिन्दस्वराज, 22) औद्योगिक सभ्यता की सुख सुविधाएँ मनुष्य की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता को नष्ट कर देती है। पराधीन राष्ट्र की बात लिया जाए तो यह सुख सुविधाएँ स्वाधिनता हासिल करने के लिए बाधा बनी और राष्ट्र को नैतिक संकट में डाल दिया। आधुनिक सभ्यता की अवधारणा की समीक्षा करती हिन्दस्वराज, आज राष्ट्र जिस नैतिक संकट का सामना करता है उसके लिए विकल्प की तलाश भी है।

आधुनिक नागरिक सभ्यता आधुनिक तकनीकी की देन है। हिन्दस्वराज औद्योगीकरण और तकनीकी पर विमर्शनात्मक दि्ष्ट डालते हुए यह सवाल उडाती है औद्योगीकरण और विज्ञान द्वारा उपजी समस्याओं का समाधान इसी दायरे में रहकर कैसे संभव हो जाएगा। खुद उपनिवेशीकरण यूरोप के विज्ञान और औद्योगीकरण की उपज है। भारत के औद्योगीकरण का मतलब देश का यूरोपीकरण है। बिना अंग्रेज़ों का ' अंग्रेज़ी राष्ट्र '।

उनके शब्दों में “आप शेर की प्रकृति चाहते हैं, शेर को नहीं। अर्थात आप भारत को इग्लैड की तरह बनाना चाहते हैं। पर जब भारत इगलैड की तरह बन जाएगा तब हम उसे हिन्दुस्तान नहीं कह पायेंगे वह इगलिस्तान हो जाएगा। हमें इस तरह की स्वराज नहीं चाहिए।” (हिन्दस्वराज, 28)

पूँजीवाद हो, साम्राज्यवाद हो या उपनिवेशवाद इनका उन्हीं के हथियार से हम प्रतिरोध नहीं कर सकते। इसके लिए नए औजार की आवश्यकता है। अपनी आत्मबल से किया गया संघर्ष ही इस व्यवस्था में आमूल परिवर्तन ला सकता है। इसका प्रयास है हिन्दस्वराज। “हिन्दस्वराज आधुनिक भारत में क्रियात्मक अवबोध को जगाने का प्रयास है। यह एक ऐसी आधुनिकता को रूपायित करने का प्रयास भी है। जिसमें संवेदना की मात्रा अधिक हो, अनुकरण की प्रचुरता न हो, आत्मविश्वास पूर्ण हो।” (रघुरामराजु, डिबेटिहङ गाँधी, 206) पश्चिम से अवगद हो पर अपनी ज़मीन से प्राप्त ज्ञान के आधार पर राष्ट्र की मुक्ती का प्रयास करे यहीं गाँधी का मत है। वे अपने भीतर विद्यमान आत्मबल के ज़रिए देशी आधुनिकता को परिभाषित कर स्वराज की व्याख्या देते हैं। पुस्तक कहती है -“स्वराज माने अपना राज। एक व्यक्ती जब अपने आप पर राज करेगे तो स्वराज संभव हो जाएगा। स्वराज अपने ही मुट्ठी में है।” (हिन्दस्वराज, 38) यानी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक सभी स्तर से पश्चिमी प्रभुता का अस्वीकार से स्वराज अपने आप मिल जाएगा। गाँधी के लिए स्वराज गोरे शासकों से देश की मुक्ति और उसके स्थान पर काले शासकों की प्रतिष्ठा नही। “स्वराज का अर्थ मात्र सावधीनता हैं। भारतीय चिंतन धारा की सुरक्षा और सतत प्रवाह का उपाय हैं। इसका अर्थ है आंतरिक ढंक से अपने को शक्तिशाली बनाना जिससे कि वर्तमान विकास प्रक्रिया को हम चुनौती दे सके और विकास और आधुनिकता की अवधारणा को बदल सके। (दस्तावेज़, 2003, 59)

एसे स्वराज के लिए यूरोपीय संसद व्यवस्था को भी वह नकारती है। इस संसद को वेश्या पुकारते हुए सत्ता वर्ग को ठुकराने वाला, किसी विशेष वर्गों तक सीमित संसद के खोखलेपन का पोल खोलते हैं। वे जन हितों को नज़रंदाज करनेवाले अंग्रेजी संसदीय व्यवस्था के बदले विकेन्द्रीकृत समाज की परिक्लपना की, ताकि देश के किसी भी व्यक्ति अपने अधिकारों से वंचित न रह जाए।

गाँधी आधुनिक विकास संक्लपना, ज्ञानपद्धति, अधिकार व्यवस्था, धार्मिक आध्यात्मिक दर्शन आदि के प्रति विमर्शनात्मक रुख अपनाते है। सुनिल पी इलयिडम का कहना है कि “नियमनिष्ठता धर्मनिरपेक्षता (गाँधी के लिए यह धर्मनिरपेक्षता आध्यात्मिकता थे) सामाजिकता, तर्कबद्धता, व्यक्तिस्वतंत्रता आदि आधुनिक विचारधाराओं को अपनाते हुए और प्रतिस्पर्धात्मक उपभोगलिप्सा, घोर वैयक्तिकता आदि का विरोध करते हुए उपनिवेशवाद विरोधी और पूँजिवाद विरोधी संघर्ष पद्धति को रुप देने का प्रयास गाँधी ने किया ”।(चरित्रम: पाठरुपङ्लुम प्रत्ययशास्त्रवुम, 186) गाँधी अपने इस प्रयास को हिन्द स्वराज के जरिए समाज के सम्मुख रखा।

Reference

1. Leela Gandhi. Post Colonial Theory A Critical Introduction, Oxford University Press, New Delhi, 1998.
2. Reghuramaraju (Ed) Debating Gandhi A Reader, Oxford University Press. New Delhi, 2006.
3. Ragavan Iyer. Moral And Political Thoughts Of Mahathma Gandhi, Oxford University Press New Delhi, 1973.
4. Renjith Guha (Ed), Subaltern Studies, Vol.3, Oxford University Press New Delhi, 1984.
5. Romian Rolland, Maharhma Gandi. A Study in Indian Nationlism, Madras, 1923.
6. Collected Works of Mahathma Gandhi VOL-40, Ministry Of Information Division Government of India, 1967.
7. Sunil P Ilayidam. Charithram: Padaroopangalum Prethyayasasthravum, Mathrubhumi Press, Kozhikode, 2004.
8. पुरनचन्द्र जोशी. स्वप्न और यथार्थ: आज़ादी की आधी सदी , राजकमल प्रकाशन, नइ दिल्ली, 2000.